NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 05-10-2024

विषय सूची

राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र

भारत के उच्चतम न्यायालय ने प्रेस की स्वतंत्रता को बरकरार रखा

राष्ट्रीय खाद्य तेल-तिलहन मिशन (NMEO-Oilseeds)

भारत का BRAP 2024 और विश्व बैंक के B-READY सूचकांक के साथ इसका एकीकरण

नक्सलवाद से लड़ाई

संक्षिप्त समाचार

श्यामजी कृष्ण वर्मा

असम की 'सह-जिला' पहल

आपातकालीन उपयोग लिस्टिंग (EUL) प्रक्रिया

अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा उपकरण विनियामक फोरम

MIBOR बेंचमार्क पर RBI की समिति की रिपोर्ट

2022-23 के लिए उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण (ASI)

राष्ट्रीय कृषि संहिता (NAC)

चारोन (Charon)

पुलिस के लिए साइबर कमांडो प्रशिक्षण

नाविका सागर परिक्रमा द्वितीय अभियान

राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र

सन्दर्भ

- भारत का बहुदलीय लोकतंत्र प्रायः व्यक्तिगत प्रतिभा के आस-पास केंद्रित रहता है, जिससे यह प्रश्न उठता है कि क्या चुनाव आयोग राजनीतिक दलों के अंदर आंतरिक लोकतंत्र सुनिश्चित कर सकता है।

पृष्ठभूमि

- राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र से तात्पर्य राजनीतिक दलों के संगठनात्मक ढांचे और कार्यप्रणाली के अंदर लोकतांत्रिक सिद्धांतों तथा प्रक्रियाओं के अभ्यास से है। इसमें निर्णय लेने की प्रक्रिया, नेतृत्व चयन, नीति निर्माण और पार्टी नेतृत्व की अपने सदस्यों के प्रति जवाबदेही सुनिश्चित करने में सभी पार्टी सदस्यों को शामिल करना सम्मिलित है।

आंतरिक लोकतंत्र के अभाव के कारण

- **कमज़ोर संगठनात्मक संरचना:** कई पार्टियों में नेताओं के चयन के लिए पारदर्शी प्रक्रियाओं का अभाव है, जिससे नियंत्रण का केंद्रीकरण हो जाता है।
- **वंशवादी राजनीति:** नेतृत्व कुछ व्यक्तियों या परिवारों द्वारा नियंत्रित होता है, जिससे नई प्रतिभाओं के लिए अवसर सीमित हो जाते हैं।
- **सदस्यों की सीमित भागीदारी:** पार्टी के अंदर चुनाव केवल प्रतीकात्मक होते हैं। इससे बुनियादी स्तर के सदस्यों में मोहभंग और अलगाव उत्पन्न होता है।

आंतरिक लोकतंत्र की आवश्यकता

- **लोकतंत्र की संस्कृति का पोषण:** मजबूत आंतरिक लोकतांत्रिक तंत्र वाली पार्टियाँ सत्ता में आने पर लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने की अधिक संभावना रखती हैं, जिससे पारदर्शिता, जवाबदेही और अनुक्रियाशीलता सुनिश्चित होती है।
- **नेतृत्व विकास:** लोकतांत्रिक रूप से संरचित पार्टियाँ प्रतिस्पर्धा और योग्यता को प्रोत्साहित करती हैं, जिससे युवा तथा अधिक सक्षम नेताओं को रैंक के माध्यम से आगे बढ़ने का मौका मिलता है।
- **बुनियादी स्तर के सदस्यों को सशक्त बनाना:** आंतरिक लोकतंत्र यह सुनिश्चित करता है कि निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में पार्टी कार्यकर्ताओं और आम सदस्यों की आवाज़ सुनी जाए।

चुनाव आयोग के दिशानिर्देश

- **जनप्रतिनिधित्व अधिनियम:** ECI ने समय-समय पर जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 29ए के तहत पार्टियों के पंजीकरण के लिए जारी दिशा-निर्देशों का उपयोग पार्टियों को चुनाव कराने की याद दिलाने और यह सुनिश्चित करने के लिए किया है कि प्रत्येक पांच वर्ष में उनका नेतृत्व नवीनीकृत, बदला या फिर से चुना जाए।
- **किसी पार्टी के लिए कोई स्थायी अध्यक्ष नहीं:** ECI ने राजनीतिक दलों के अंदर 'स्थायी अध्यक्ष' की अवधारणा का विरोध किया है, क्योंकि यह पार्टियों के भीतर नेतृत्व परिवर्तन और निष्पक्ष प्रतिनिधित्व के सिद्धांत को कमजोर करता है।

- **पार्टी संविधान:** अधिनियम के तहत पंजीकरण के लिए आवेदन करने वाले दलों के लिए चुनाव आयोग के दिशा-निर्देशों में कहा गया है कि आवेदक को पार्टी संविधान की एक प्रति प्रस्तुत करनी चाहिए।

चिंताएं

- **केवल धोखाधड़ी के मामलों में पंजीकरण रद्द करना:** उच्चतम न्यायालय ने 2002 में निर्णय दिया था कि चुनाव आयोग के पास राजनीतिक दलों को पंजीकृत करने का अधिकार है, लेकिन वह केवल सीमित परिस्थितियों में ही किसी पार्टी का पंजीकरण रद्द कर सकता है।
- **राजनीतिक दलों का पंजीकरण रद्द करने की शक्ति:** ECI ने पहले भी कानून मंत्रालय से राजनीतिक दलों का पंजीकरण रद्द करने की शक्ति मांगी है, लेकिन प्रस्ताव अभी तक लागू नहीं हुआ है।

आगे की राह

- राजनीतिक दलों के अंदर आंतरिक लोकतंत्र सुनिश्चित करना देश के समग्र लोकतांत्रिक ताने-बाने को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है।
- हालांकि चुनाव आयोग ने इस दिशा में कदम उठाए हैं, लेकिन इसकी शक्तियाँ सीमित हैं। आंतरिक लोकतंत्र को अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए चुनाव आयोग को सशक्त बनाने के लिए, संभवतः कानून के माध्यम से, व्यापक सुधार की आवश्यकता है।

भारत का निर्वाचन आयोग

- इसकी स्थापना 25 जनवरी 1950 को संविधान के अनुसार की गई थी।
- इसकी शक्तियों, नियुक्ति और कर्तव्यों का उल्लेख संविधान के भाग XV (अनुच्छेद 324 से अनुच्छेद 329) में किया गया है।
    - इसके अतिरिक्त, जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 और जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 के तहत इसकी भूमिका को विस्तृत किया गया है।
- **जिम्मेदारी:** यह निकाय लोकसभा, राज्यसभा, राज्य विधानसभाओं, राज्य विधान परिषदों और देश के राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति के कार्यालयों के लिए चुनाव कराता है।

Source: TH

भारत के उच्चतम न्यायालय ने प्रेस की स्वतंत्रता को बरक़रार रखा

सन्दर्भ

- हाल ही में भारत के उच्चतम न्यायालय ने निर्णय दिया कि केवल सरकार की आलोचना करने पर पत्रकारों के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज नहीं किया जा सकता।

प्रेस स्वतंत्रता के बारे में

- यह लोकतांत्रिक समाजों की आधारशिला है, जो सूचना तथा विचारों के मुक्त प्रवाह को सक्षम बनाता है और सत्ता में बैठे लोगों को जवाबदेह बनाता है।

- यह एक लोकतांत्रिक समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और लोगों के लिए समाचार एकत्र करने के लिए एक एजेंसी के रूप में कार्य करता है।
- भारत में, प्रेस की स्वतंत्रता को संविधान के अनुच्छेद 19 (1) (a) द्वारा गारंटीकृत भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हिस्सा माना जाता है।
- इसे भारत के उच्चतम न्यायालय के विभिन्न ऐतिहासिक निर्णयों में बरकरार रखा गया है।

प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध

- भारत की संप्रभुता और अखंडता, राज्य की सुरक्षा, सार्वजनिक व्यवस्था, शालीनता या नैतिकता के हित में या न्यायालय की अवमानना, मानहानि या किसी अपराध के लिए उकसाने के संबंध में, जैसा कि संविधान के अनुच्छेद 19 (2) में उल्लेख किया गया है, इस अधिकार पर उचित प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं।
    - इसलिए, मीडिया की स्वतंत्रता पूर्ण स्वतंत्रता नहीं है।
- संविधान प्रेस की स्वतंत्रता प्रदान करता है, लेकिन यह भी अनिवार्य करता है कि प्रेस जिम्मेदार होना चाहिए।

प्रेस स्वतंत्रता की वर्तमान स्थिति

- रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (RSF) द्वारा जारी विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक में भारत की रैंकिंग में उल्लेखनीय गिरावट आई है, जो 2023 में 180 देशों में से 161वें स्थान पर आ गई है।
    - यह गिरावट एक व्यापक क्षेत्रीय प्रवृत्ति का हिस्सा है, जिसमें एशिया-प्रशांत क्षेत्र के कई देश इसी तरह की गिरावट का सामना कर रहे हैं।
- रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (RSF) की रिपोर्ट इस गिरावट के लिए विभिन्न कारकों को जिम्मेदार ठहराती है, जिसमें राजनीतिक हस्तक्षेप में वृद्धि, आर्थिक दबाव और पत्रकारों की सुरक्षा के लिए खतरे शामिल हैं।

पत्रकारों के समक्ष चुनौतियाँ

- **राजनीतिक दबाव:** मीडिया आउटलेट्स को प्रायः राजनीतिक संस्थाओं से दबाव का सामना करना पड़ता है, जिससे पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग और आत्म-सेंसरशिप हो सकती है।
- **आर्थिक बाधाएँ:** राजनीतिक संबंधों वाले व्यावसायिक समूहों द्वारा मीडिया आउटलेट्स का अधिग्रहण संपादकीय स्वतंत्रता को सीमित कर देता है।
- **सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:** पत्रकारों पर धमकियाँ और हमले चिंताजनक रूप से सामान्य हो गए हैं, जिससे भय और धमकी का वातावरण बन रहा है।
- **गैर-मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना:** इस बात की आलोचना की जाती है कि मीडिया प्रायः गरीबी, बेरोजगारी और स्वास्थ्य सेवा जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों से ध्यान हटाकर कम महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिससे अधिकांश जनसँख्या की वास्तविक चिंताओं को संबोधित नहीं किया जाता है।

चिंताएँ

- मीडिया संघों और नागरिक समाज समूहों ने भारत में प्रेस की स्वतंत्रता की बिगड़ती स्थिति पर अपनी चिंता व्यक्त की है। भारतीय महिला प्रेस कोर, प्रेस क्लब ऑफ इंडिया और प्रेस एसोसिएशन ने इन मुद्दों को संबोधित करने की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए बयान जारी किए हैं। वे इस बात पर बल देते हैं कि असुरक्षित कामकाजी परिस्थितियाँ और शत्रुतापूर्ण वातावरण स्वतंत्र प्रेस के लिए हानिकारक हैं।
- **लोकतंत्र पर प्रभाव:** प्रेस की स्वतंत्रता में गिरावट का भारतीय लोकतंत्र पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। सूचित नागरिक और जवाबदेह शासन के लिए एक स्वतंत्र प्रेस आवश्यक है। जब पत्रकार बिना किसी भय या पक्षपात के रिपोर्ट करने में असमर्थ होते हैं, तो लोकतंत्र का ताना-बाना खतरे में पड़ जाता है।
- **डिजिटल मीडिया विनियमन:** सरकार ने सोशल मीडिया की निगरानी के लिए तथ्य-जांच इकाइयों सहित डिजिटल मीडिया को विनियमित करने के उपायों का प्रस्ताव दिया है। हालांकि इन उपायों का उद्देश्य फर्जी खबरों पर अंकुश लगाना है, लेकिन इन उपायों से मीडिया पर सेंसरशिप और नियंत्रण का दायरा बढ़ने की आशंका है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- जैसे-जैसे भारत आगे बढ़ रहा है, प्रेस की स्वतंत्रता की सुरक्षा को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है।
- पत्रकारों की सुरक्षा और स्वतंत्रता सुनिश्चित करना केवल एक पेशे की सुरक्षा के बारे में नहीं है; यह देश की नींव रखने वाले लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने के बारे में है।
- आगे की राह चुनौतीपूर्ण हो सकती है, लेकिन एक जीवंत और लचीले लोकतंत्र के लिए प्रेस की स्वतंत्रता के प्रति प्रतिबद्धता आवश्यक है।

Source: TH

राष्ट्रीय खाद्य तेल-तिलहन मिशन(NMEO-Oilseeds)

सन्दर्भ

- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने घरेलू तिलहन उत्पादन बढ़ाने और खाद्य तेलों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय खाद्य तेल-तिलहन मिशन (NMEO-Oilseeds) को मंजूरी दी।

राष्ट्रीय खाद्य तेल-तिलहन मिशन(NMEO-Oilseeds)

- यह पहल 2024-25 से 2030-31 तक चलेगी और इसमें रेपसीड-सरसों, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी और तिल जैसी प्रमुख प्राथमिक तिलहन फसलों के उत्पादन को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
    - यह कपास के बीज, चावल की भूसी और वृक्ष जनित तेलों जैसे द्वितीयक स्रोतों से संग्रह तथा निष्कर्षण दक्षता बढ़ाने पर भी ध्यान केंद्रित करेगा।
- **उद्देश्य:** प्राथमिक तिलहन उत्पादन को 39 मिलियन टन (2022-23) से बढ़ाकर 2030-31 तक 69.7 मिलियन टन करना, जो हमारी अनुमानित घरेलू आवश्यकता का लगभग 72% पूरा करेगा।

- **कार्यान्वयन:** उच्च उपज वाली उच्च तेल सामग्री वाली बीज किस्मों को अपनाने को बढ़ावा देकर, चावल की परती भूमि में खेती का विस्तार करके और अंतर-फसल को बढ़ावा देकर।
  - मिशन जीनोम एडिटिंग जैसी अत्याधुनिक वैश्विक तकनीकों का उपयोग करके उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के चल रहे विकास का लाभ उठाएगा।
  - बीज उत्पादन के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए सार्वजनिक क्षेत्र में 65 नए बीज केंद्र और 50 बीज भंडारण इकाइयाँ स्थापित की जाएंगी।
  - FPOs, सहकारी समितियों और उद्योग जगत के खिलाड़ियों को फसल कटाई के बाद की इकाइयों की स्थापना या उन्नयन के लिए सहायता प्रदान की जाएगी, जिससे कपास के बीज, चावल की भूसी, मकई का तेल और वृक्ष जनित तेल (TBOs) जैसे स्रोतों से वसूली बढ़ेगी।
- **मूल्य श्रृंखला क्लस्टर:** 347 अद्वितीय जिलों में 600 से अधिक मूल्य श्रृंखला क्लस्टर विकसित किए जाएंगे, जो वार्षिक 10 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र को कवर करेंगे।
  - इन क्लस्टरों का प्रबंधन FPOs, सहकारी समितियों और सार्वजनिक या निजी संस्थाओं जैसे मूल्य श्रृंखला भागीदारों द्वारा किया जाएगा।
  - इन क्लस्टरों में किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज, अच्छी कृषि पद्धतियों (GAP) पर प्रशिक्षण और मौसम तथा कीट प्रबंधन पर सलाहकार सेवाओं तक पहुंच होगी।
- **फसल विविधीकरण:** मिशन चावल और आलू की परती भूमि को लक्षित करके, अंतर-फसल को बढ़ावा देकर तथा फसल विविधीकरण को बढ़ावा देकर तिलहन की खेती को अतिरिक्त 40 लाख हेक्टेयर तक बढ़ाने का भी प्रयास करता है।
- **आहार जागरूकता:** मिशन सूचना, शिक्षा और संचार (IEC) अभियान के माध्यम से खाद्य तेलों के लिए अनुशंसित आहार दिशानिर्देशों के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देगा।

भारत में तिलहन उत्पादन

- भारत विश्व का चौथा सबसे बड़ा तिलहन उत्पादक है, जो अमेरिका, चीन और ब्राजील से पीछे है।
- विश्व स्तर पर खेती के तहत कुल क्षेत्रफल का 20.8% हिस्सा भारत में है, जो वैश्विक उत्पादन का 10% है।
- भारत में सबसे बड़े तिलहन उत्पादक राज्यों में राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, तमिलनाडु और तेलंगाना शामिल हैं।
- **मांग:** पिछले दशकों में देश में खाद्य तेल की प्रति व्यक्ति खपत में वृद्धि देखी गई है।
  - मांग में यह उछाल घरेलू उत्पादन से काफी आगे निकल गया है, जिससे घरेलू और औद्योगिक दोनों जरूरतों को पूरा करने के लिए आयात पर भारी निर्भरता हो गई है।
- **आयात:** 2022-23 में भारत ने 16.5 मिलियन टन (MT) खाद्य तेलों का आयात किया, जिसमें घरेलू उत्पादन देश की आवश्यकताओं का केवल 40-45% ही पूरा कर पाया।
  - यह स्थिति खाद्य तेलों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के देश के लक्ष्य के लिए एक बड़ी चुनौती प्रस्तुत करती है।

आगे की राह

- इस निर्भरता को दूर करने और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए, भारत सरकार ने खाद्य तेलों के घरेलू उत्पादन को बढ़ाने के लिए कई उपाय किए हैं, जिनमें राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन - ऑयल पाम (NMEO-OP) का शुभारंभ भी शामिल है।
    - इसके अतिरिक्त , तिलहन किसानों को लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य खाद्य तिलहनों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) में उल्लेखनीय वृद्धि की गई है।
- प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान (PM-AASHA) की निरंतरता यह सुनिश्चित करती है कि तिलहन किसानों को मूल्य समर्थन योजना और मूल्य कमी भुगतान योजना के माध्यम से MSP प्राप्त हो।
- घरेलू उत्पादकों को सस्ते आयात से बचाने और स्थानीय खेती को प्रोत्साहित करने के लिए खाद्य तेलों पर 20% आयात शुल्क लगाया गया है।

Source: PIB

भारत का BRAP 2024 और विश्व बैंक के B-READY सूचकांक के साथ इसका एकीकरण

समाचार में

- देश में व्यापार करने में आसानी को बेहतर बनाने के सरकारी प्रयासों के तहत भारत अपनी राज्य व्यापार तत्परता रैंकिंग को विश्व बैंक के B-READY सूचकांक के अनुरूप बना रहा है।

परिचय

- **B-READY इंडेक्स के साथ संरेखण:** उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग द्वारा तैयार की गई BRAP रैंकिंग अपने 2024 संस्करण में विश्व बैंक के B-READY इंडेक्स से चुनिंदा संकेतकों को एकीकृत करेगी।
- **उद्यम सर्वेक्षण लॉन्च:** B-READY इंडेक्स के लिए उद्यम सर्वेक्षण अक्टूबर में शुरू होने वाला है। विश्व बैंक इस उद्यम अध्ययन के लिए उद्योगों का एक नमूना निर्धारित करने के लिए सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के साथ सहयोग करेगा।
- **भागीदारी समयरेखा:** जबकि B-READY रैंकिंग 2024 में शुरू होगी, इस अभ्यास में भारत की भागीदारी 2026 से पहले नहीं होगी।
- केंद्र सरकार ने राज्यों को अंतर्राष्ट्रीय सूचकांक में अपनी स्थिति बढ़ाने के लिए B-READY मूल्यांकन में पहचाने गए अंतरालों की पहचान करने और उन्हें सुधारने के लिए प्रोत्साहित किया है।

B-READY सूचकांक के पीछे तर्क

- B-READY इंडेक्स का उद्देश्य पहले प्रयोग की जाने वाली ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रैंकिंग को परिवर्तित करना है, जिसे रिपोर्ट की गई अनियमितताओं के कारण 2021 में रोक दिया गया था।
- इस नए ढांचे का उद्देश्य किसी देश के कारोबारी वातावरण का आकलन करते समय कारकों की एक व्यापक श्रृंखला पर विचार करना है।

- वैश्विक वित्तीय संस्थानों और बहुराष्ट्रीय निगमों से अपेक्षा की जाती है कि वे राष्ट्रों के अंदर नियामक और नीतिगत स्थितियों का आकलन करने के लिए B-READY ढांचे का उपयोग करें।
- B-READY इंडेक्स देशों को अपने व्यावसायिक नियामक वातावरण को समझने और सुधारने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण प्रदान करेगा, जिससे निवेश आकर्षित करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में सहायता मिलेगी।

बिजनेस-रेडी (B-Ready) सूचकांक के बारे में

- B-READY इंडेक्स विश्व बैंक द्वारा विकसित एक आगामी वैश्विक व्यापार सुगमता रैंकिंग प्रणाली है।
- इसे बंद हो चुकी डूइंग बिजनेस रिपोर्ट (2021 में बंद) को बदलने के लिए डिज़ाइन किया गया है और यह विभिन्न देशों में कारोबारी वातावरण और नियामक ढांचे का आकलन तथा तुलना करेगा।
- B-READY इंडेक्स की मुख्य विशेषताएं:
  - **कारोबारी वातावरण का आकलन:** इंडेक्स कारोबार शुरू करने, संचालन करने और बढ़ाने में आसानी के आधार पर देशों का मूल्यांकन करेगा।
  - **उद्यम सर्वेक्षण:** रैंकिंग काफी हद तक उद्यम सर्वेक्षणों पर निर्भर करेगी, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में व्यवसायों से डेटा एकत्र करना शामिल है ताकि उनके सामने आने वाली नियामक चुनौतियों को समझा जा सके।
  - **व्यापक संकेतक:** यह परमिट प्राप्त करने में आसानी, कराधान प्रणाली, ऋण तक पहुंच और कारोबारी वातावरण को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों सहित विभिन्न संकेतकों को ट्रैक करेगा।
  - **समावेशिता पर ध्यान:** इंडेक्स का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विविध कारोबारी वातावरण, विशेष रूप से उभरती अर्थव्यवस्थाओं में, निष्पक्ष रूप से मूल्यांकन किया जाए।

महत्वपूर्ण बिंदु:

- **भारत का पिछला प्रदर्शन:** भारत ने अपने ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस इंडेक्स रैंकिंग में सुधार देखा, जो 2014 में 142वें स्थान से बढ़कर 2020 में 63वें स्थान पर पहुंच गया।
- **हालिया BRAP रैंकिंग:** सरकार ने हाल ही में BRAP 2022 रैंकिंग जारी की, जिसमें आंध्र प्रदेश और केरल शीर्ष प्रदर्शनकर्ता के रूप में उभरे।

Source: MoneyControl

नक्सलवाद से लड़ाई

सन्दर्भ

- छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में सुरक्षा बलों ने मुठभेड़ में कम से कम 28 माओवादियों को मार गिराया।

नक्सलवाद के बारे में

- नक्सलवाद या वामपंथी उग्रवाद (LWE) भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए प्रमुख चुनौतियों में से एक है।

- भारत में नक्सल प्रभावित क्षेत्रों को 'लाल गलियारा' के रूप में जाना जाता है।

- **नक्सलवाद का कारण:** नक्सली हिंसक साधनों के माध्यम से राज्य को उखाड़ फेंकना चाहते हैं। वे खुले तौर पर मतदान के लोकतांत्रिक साधनों में विश्वास की कमी की घोषणा करते हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के साधन के रूप में हिंसा का सहारा लेते हैं।
- **प्रारंभिक चरण:** नक्सल आंदोलन की शुरुआत 1967 में पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले के नक्सलबाड़ी गांव में जमींदारों के खिलाफ आदिवासी-किसान विद्रोह के साथ हुई थी।
  - इस विद्रोह का नेतृत्व चारु मजूमदार, कानू सान्याल और जंगल संथाल जैसे नेताओं ने किया था।
- **भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी):** 2004 में, दो मुख्य नक्सली समूहों, अर्थात् भारतीय माओवादी कम्युनिस्ट केंद्र (MCCI) और पीपुल्स वार ने विलय करके CPI (माओवादी) पार्टी का गठन किया।
- अंततः 2008 तक अधिकांश अन्य नक्सली समूहों का विलय CPI (माओवादी) में हो गया, जो नक्सली संगठनों के छत्र के रूप में उभरा।
- CPI (माओवादी) और इसके सभी अग्रणी संगठन गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम, 1967 के तहत प्रतिबंधित आतंकवादी संगठनों की सूची में शामिल किए गए हैं।

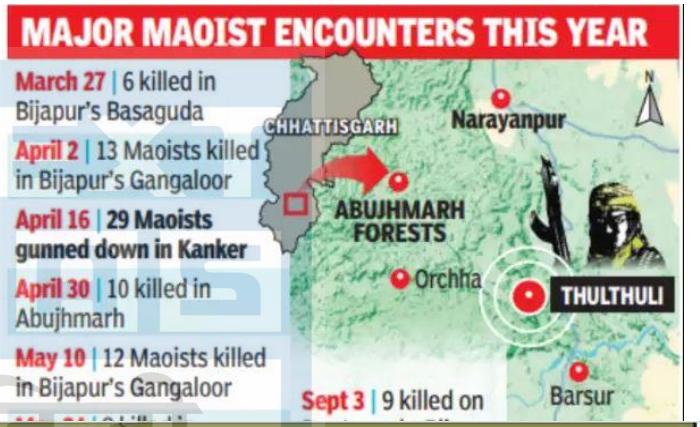

भारत में माओवादियों की उपस्थिति

- छत्तीसगढ़, झारखंड, उड़ीसा और बिहार राज्य गंभीर रूप से प्रभावित माने जाते हैं।
- पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश राज्य आंशिक रूप से प्रभावित माने जाते हैं। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश राज्य मामूली रूप से प्रभावित माने जाते हैं।
- CPI(माओवादी) दक्षिणी राज्यों केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु में घुसपैठ कर रहे हैं और इन राज्यों के मा ध्यम से पश्चिमी घाटों को पूर्वी घाटों से जोड़ने की योजना बना रहे हैं।
- वे असम और अरुणाचल प्रदेश में घुसपैठ करने की कोशिश

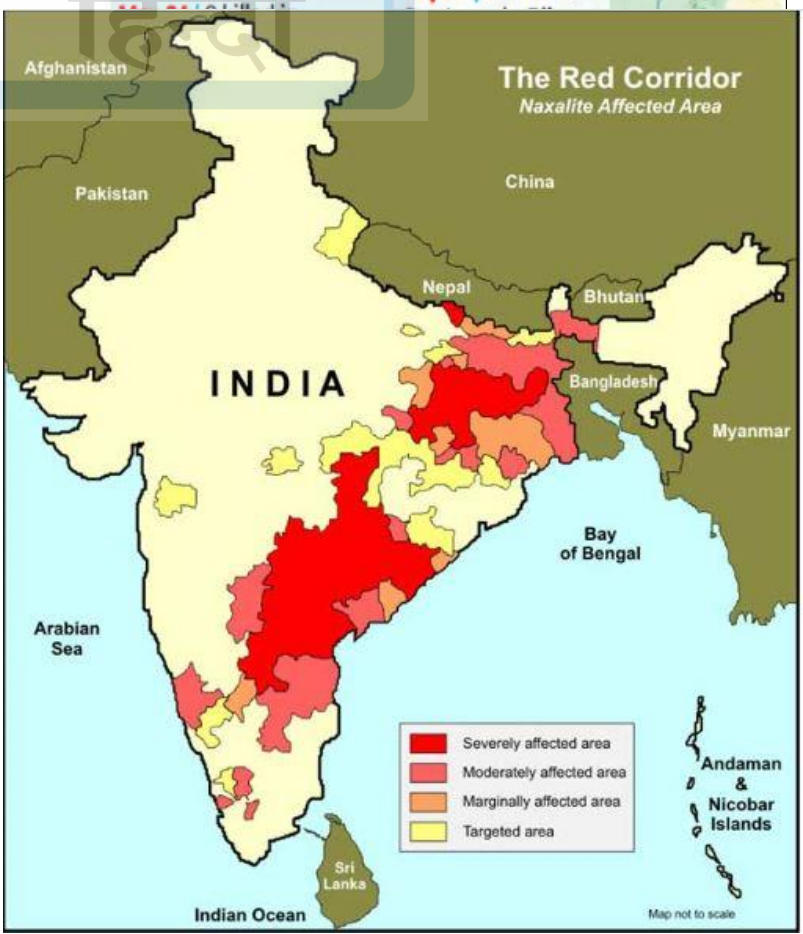

कर रहे हैं, जिसके दीर्घकालिक रणनीतिक निहितार्थ हैं।

नक्सलवाद के कारण

- **मुख्य धारा से वंचना:** नक्सली किसी विशेष धर्म या समुदाय से संबंधित नहीं हैं, बल्कि मुख्य रूप से दलित, आदिवासी और समाज के अन्य मुख्य धारा से वंचित वर्ग हैं। मूल मुद्दे भूमि सुधार और आर्थिक विकास हैं।
  - वैचारिक आयाम माओवाद द्वारा प्रदान किया जाता है।
- **नक्सलियों के समर्थन का आधार:** नक्सली आंदोलन को भूमिहीन, बटाईदार, खेतिहर मजदूर, हरिजन और आदिवासियों के बीच समर्थन प्राप्त है।
  - जब तक इन लोगों का शोषण होता रहेगा और सामाजिक न्याय को विफल किया जाता रहेगा, तब तक नक्सलियों का यह समर्थन आधार बना रहेगा।
- **वन प्रबंधन और आदिवासियों की आजीविका:** आदिवासियों के लिए जंगल, जमीन और पानी उनकी आजीविका का साधन है।
  - उन्हें विभिन्न अधिनियमों और आदेशों के तहत इनसे वंचित किया गया है, जिससे अधिकारियों के खिलाफ नाराजगी बढ़ी है।
- **विकास का अभाव:** विकासात्मक गतिविधियों का अभाव और उन क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा, पेयजल, सड़क, बिजली और शैक्षिक सुविधाओं का अभाव, जहाँ नक्सलवाद ने आधार बना लिया है।

नक्सलवादी कैसे देश के लिए चुनौती बन गए हैं?

- **बाह्य खतरों के प्रति संवेदनशीलता:** माओवादी आंदोलन भारत की आंतरिक कमजोरियों को उजागर करता है, जो भारत को बाह्य खतरों के प्रति भी संवेदनशील बनाता है।
  - CPI(माओवादी) के कई पूर्वोत्तर विद्रोही समूहों के साथ घनिष्ठ भाईचारे वाले संबंध हैं।
  - इनमें से अधिकांश संगठनों के भारत विरोधी बाहरी ताकतों के साथ संबंध हैं।
  - CPI(माओवादी) ने प्रायः जम्मू-कश्मीर के आतंकवादी समूहों के साथ अपनी एकजुटता भी व्यक्त की है।
- **आर्थिक विकास में बाधाएँ:** माओवादी भारत के गरीब और हाशिए पर पड़े क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, देश के आर्थिक विकास के लिए आंतरिक व्यवस्था और स्थिरता आवश्यक है।
- **आंतरिक सुरक्षा पर अतिरिक्त व्यय:** नक्सली गतिविधियाँ रक्षा और आंतरिक सुरक्षा पर दुर्लभ संसाधनों का उपयोग कर रही हैं, जबकि इसे सामाजिक विकास जैसे क्षेत्रों पर खर्च किया जाना चाहिए।
- **शासन पर प्रतिकूल प्रभाव:** माओवादी वर्चस्व वाले क्षेत्रों में शासन का अभाव है, जो सबसे पहले उनके हिंसक तरीकों से उत्पन्न होता है।
  - हत्या, अपहरण, धमकी और जबरन वसूली के माध्यम से सेवा वितरण प्रणाली को समाप्त कर दिया जाता है।

भारत सरकार का दृष्टिकोण

- **केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (CAPFs) की तैनाती:** CAPFs/नागा बटालियन (BNs) की बटालियनों को वामपंथी उग्रवाद प्रभावित राज्यों में राज्य पुलिस की सहायता के लिए तैनात किया जाता है।
- **सुरक्षा संबंधी व्यय (SRE) योजना:** सुरक्षा बलों की बीमा, प्रशिक्षण और परिचालन आवश्यकताओं, आत्मसमर्पण करने वाले वामपंथी उग्रवादी कैडरों के पुनर्वास तथा हिंसा के विरुद्ध जागरूकता उत्पन्न करने के लिए प्रचार सामग्री से संबंधित आवर्ती व्यय को पूरा करने के लिए धन उपलब्ध कराया जाता है।
- **समीक्षा और निगरानी तंत्र:** सरकार द्वारा कई समीक्षा और निगरानी तंत्र स्थापित किए गए हैं और गृह मंत्रालय विभिन्न स्तरों पर नियमित आधार पर स्थिति की निगरानी करता है।
- **खुफिया जानकारी जुटाने के तंत्र को मजबूत बनाना:** केंद्र और राज्य स्तर पर खुफिया एजेंसियों की क्षमताओं को मजबूत और उन्नत करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं।
    - इनमें केंद्र और राज्य स्तर पर मल्टी-एजेंसी सेंटर (MAC) और सहायक स्तर पर मल्टी एजेंसी सेंटर (SMAC) के माध्यम से 24x7 आधार पर खुफिया जानकारी साझा करना शामिल है।
- **बेहतर अंतर-राज्यीय समन्वय:** अंतर-राज्यीय समन्वय को बेहतर बनाने के लिए सरकार देश भर में वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित राज्यों के सीमावर्ती जिलों की आधिकारिक मशीनरी के बीच लगातार बैठकें और बातचीत करती है।
- **इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (IEDs) की चुनौती से निपटना:** IED माओवादियों के हाथों में सबसे शक्तिशाली हथियार है।
    - केंद्रीय गृह मंत्रालय ने 'नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विस्फोटकों/IEDs/बारूदी सुरंगों से संबंधित मुद्दों' पर एक मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) तैयार की है और अनुपालन के लिए इसे हितधारकों को भेजा गया है।
- **हवाई सहायता को मजबूत करना:** राज्य सरकारों और CAPFs को हताहतों/घायल व्यक्तियों को निकालने सहित नक्सल विरोधी अभियानों के लिए UAVs और हेलीकॉप्टरों के रूप में हवाई सहायता बढ़ाई गई है।

आगे की राह

- यह व्यापक रूप से स्वीकार्य दृष्टिकोण है कि विकास और सुरक्षा संबंधी हस्तक्षेपों के संयोजन के माध्यम से नक्सल समस्या से सफलतापूर्वक निपटा जा सकता है।
- इस समस्या को पूरी तरह से कानून और व्यवस्था के मुद्दे के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। प्रायः, आंतरिक वन क्षेत्रों में रहने वाले निर्दोष आदिवासी नक्सली धमकी के शिकार हो जाते हैं।
- नक्सल प्रभावित क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित करना, उनका विकास करना और वहां रहने वाले हाशिए के लोगों को सुरक्षित, सम्मानजनक और बेहतर जीवन जीने में सक्षम बनाना महत्वपूर्ण है।
- यह ध्यान देने योग्य है कि सरकार द्वारा शुरू किए गए उपायों के कारण पिछले कुछ वर्षों में वामपंथी हिंसा में काफी कमी आई है।

Source: TH

संक्षिप्त समाचार

श्यामजी कृष्ण वर्मा

सन्दर्भ

- प्रधानमंत्री मोदी ने क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी श्यामजी कृष्ण वर्मा को उनकी 95वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

परिचय

- श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर, 1857 को गुजरात में हुआ था।
- वे एक भारतीय क्रांतिकारी सेनानी, अधिवक्ता और पत्रकार थे।
- भारतीय राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता के उद्देश्य को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने लंदन में निम्नलिखित की स्थापना की;
    - इंडियन होम रूल सोसाइटी इंडिया हाउस और
    - इंडियन सोशियोलॉजिस्ट (राष्ट्रवादी विचारों का समर्थन करने वाली पत्रिका)।

विरासत

- श्यामजी कृष्ण वर्मा बॉम्बे आर्य समाज के पहले अध्यक्ष थे और दयानंद सरस्वती से बहुत प्रभावित थे।
- उन्होंने वीर सावरकर जैसे भारतीय क्रांतिकारियों को प्रेरित करने में भूमिका निभाई, जो लंदन में इंडिया हाउस से भी जुड़े थे।
- उन्होंने भारत में कई रियासतों के दीवान (प्रधानमंत्री) के रूप में भी कार्य किया।

Source: AIR

असम की 'सह-जिला' पहल

सन्दर्भ

- असम ने "सह-जिलों" की शुरूआत के साथ एक अद्वितीय प्रशासनिक सुधार की शुरुआत की है, जो प्रभावी रूप से सिविल उप-डिवीजनों की वर्तमान प्रणाली को प्रतिस्थापित करेगा।

परिचय

- सह-जिला, जिलों से नीचे की छोटी प्रशासनिक इकाइयाँ हैं, जिनका नेतृत्व सहायक जिला आयुक्त के पद का अधिकारी करता है, और उन्हें जिला आयुक्तों के समान शक्तियों और जिम्मेदारियों को पूरा करने का कार्य सौंपा जाता है।
- इस कदम का उद्देश्य प्रशासनिक चुनौतियों का समाधान करना और न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन के दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करते हुए शासन की दक्षता में सुधार करना है।

- सह-जिला आयुक्त भूमि, विधायक निधि, सरकारी योजनाओं के कार्यान्वयन और अन्य से संबंधित मामलों को संभालेंगे, जिससे जिला मुख्यालय का दौरा किए बिना स्थानीय स्तर पर इन सेवाओं तक पहुँच बनाई जा सकेगी।
- इससे शासन का विकेंद्रीकरण, नागरिक-केंद्रित सेवाओं को बढ़ाने और पूरे राज्य में विकास प्रयासों को सुव्यवस्थित करने की उम्मीद है।

Source: IE

आपातकालीन उपयोग सूचीकरण (EUL) प्रक्रिया

समाचार में

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने अपनी आपातकालीन उपयोग सूचीकरण (EUL) प्रक्रिया के तहत पहले एमपॉक्स (मंकीपॉक्स) डायग्नोस्टिक परीक्षण को मंजूरी दे दी है।

EUL प्रक्रिया के बारे में

- **त्वरित मूल्यांकन:** EUL प्रक्रिया चिकित्सा उत्पादों के त्वरित मूल्यांकन की अनुमति देती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे आपातकालीन स्थितियों में आवश्यक गुणवत्ता, सुरक्षा और प्रभावकारिता मानकों को पूरा करते हैं।
- **अस्थायी प्राधिकरण:** EUL के तहत सूचीबद्ध उत्पादों को उपयोग के लिए अस्थायी प्राधिकरण दिया जाता है, जबकि आगे के डेटा और अध्ययन एकत्र किए जाते हैं।
- **वैश्विक पहुँच के लिए समर्थन:** EUL अनुमोदन महत्वपूर्ण चिकित्सा उत्पादों तक वैश्विक पहुँच की सुविधा प्रदान करता है, विशेष रूप से उन देशों या क्षेत्रों में जहाँ सीमित स्वास्थ्य सेवा संसाधन या कम सेवा प्राप्त जनसँख्या है।
- EUL प्रक्रिया का उपयोग हाल के वैश्विक स्वास्थ्य संकटों, जैसे कि COVID-19 महामारी के दौरान व्यापक रूप से किया गया है, ताकि WHO मानकों को पूरा करने वाले टीकों, निदान और उपचारों की उपलब्धता में तेज़ी लाई जा सके।

Source: IE

अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा उपकरण विनियामक फोरम

सन्दर्भ

- भारत अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा उपकरण विनियामक फोरम (IMDRF) का संबद्ध सदस्य बन गया है।

अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा उपकरण विनियामक फोरम (IMDRF)

- IMDRF विश्व भर के चिकित्सा उपकरण विनियामकों का एक स्वैच्छिक समूह है।
- इसकी स्थापना 2011 में अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा उपकरण विनियामक सामंजस्य और अभिसरण में तेजी लाने के लिए की गई थी, जो इसके पूर्ववर्ती, ग्लोबल हार्मोनाइजेशन टास्क फोर्स (GHTF) के आधारभूत कार्य पर आधारित है।

- **IMDRF के सदस्य:** इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, यूरोपीय संघ, जापान, यूनाइटेड किंगडम, ब्राजील, रूस, चीन, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर और विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के राष्ट्रीय नियामक प्राधिकरण शामिल हैं।

Source: PIB

MIBOR बेंचमार्क पर RBI की समिति की रिपोर्ट

सन्दर्भ

- भारतीय रिजर्व बैंक ने मुंबई इंटरबैंक आउटराइट रेट (MIBOR) की कार्यप्रणाली में बदलाव की सिफारिश करते हुए एक रिपोर्ट जारी की।

परिचय

- रिपोर्ट में एक नए बेंचमार्क में बदलाव का प्रस्ताव है, जिसे सुरक्षित ओवरनाइट रुपया दर (SORR) कहा जाता है।
- यह नई दर असुरक्षित अंतर-बैंक ऋण के बजाय मुद्रा बाजार में सुरक्षित लेनदेन पर आधारित है, जो अधिक स्थिरता प्रदान करती है और इससे जुड़े जोखिम को कम करती है।

मुंबई इंटरबैंक आउटराइट रेट (MIBOR) क्या है?

- इसे 1998 में नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE) द्वारा भारत के अंतर-बैंक मुद्रा बाजार को विकसित करने के प्रयासों के एक भाग के रूप में प्रस्तुत किया गया था।
- MIBOR का उद्देश्य बैंकों के बीच एक दिन की उधारी दर को मापना है तथा वित्तीय संस्थाओं के लिए उधार लेने की लागत निर्धारित करने में सहायता करता है।
- यह विभिन्न वित्तीय साधनों, जैसे फ्लोटिंग रेट बॉन्ड, ब्याज दर स्वैप और अन्य ऋण साधनों के लिए एक बेंचमार्क के रूप में कार्य करता है।
- MIBOR व्यवसायों और बैंकों के लिए पूंजी की लागत निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Source: BS

2022-23 के लिए उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण (ASI)

सन्दर्भ

- सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) द्वारा 2022-23 के लिए उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण (ASI) जारी कर दिया गया है।

परिचय

- उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण उत्पादन, मूल्य वर्धन, रोजगार और पूंजी निर्माण के संदर्भ में विभिन्न विनिर्माण उद्योगों की संरचना, विकास और संरचना में परिवर्तन की जानकारी प्रदान करने के लिए आयोजित किया जाता है।

- यह राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी को मूल्यवान इनपुट प्रदान करता है।

प्रमुख विशेषताएं

- वर्ष 2022-23 में सकल मूल्य वर्धन (GVA) में वर्ष 2021-22 की तुलना में वर्तमान मूल्यों में 7.3% की वृद्धि हुई।
  - GVAके संदर्भ में प्रमुख राज्यों में महाराष्ट्र पहले स्थान पर रहा, उसके बाद गुजरात, तमिलनाडु, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश का स्थान रहा।
- विनिर्माण उद्योगों में कर्मचारियों की कुल संख्या में 7.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई।
  - खाद्य उत्पाद बनाने वाली फैक्ट्रियों में सबसे अधिक रोजगार दर्ज किया गया, इसके बाद कपड़ा, मूल धातु, पहनने के परिधान और मोटर वाहन, ट्रेलर तथा अर्ध-ट्रेलर का स्थान रहा।
- विनिर्माण वृद्धि के मुख्य चालक मूल धातु, कोक और परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पाद, खाद्य उत्पाद, रसायन और रासायनिक उत्पाद और मोटर वाहन से संबंधित उद्योग थे।

Source: PIB

राष्ट्रीय कृषि संहिता(NAC)

सन्दर्भ

- भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) ने वर्तमान राष्ट्रीय भवन संहिता और राष्ट्रीय विद्युत संहिता की तर्ज पर राष्ट्रीय कृषि संहिता (NAC) तैयार करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

परिचय

- **BIS:** यह राष्ट्रीय निकाय है जो विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों में विभिन्न उत्पादों के लिए मानक निर्धारित करता है।
  - कृषि में, इसने मशीनरी (ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, आदि) और विभिन्न इनपुट (उर्वरक, कीटनाशक, आदि) के लिए पहले से ही मानक निर्धारित कर रखे हैं।
  - हालांकि, अभी भी कई क्षेत्र ऐसे हैं जो BIS मानकों के दायरे में नहीं आते हैं।
- NAC पूरे कृषि चक्र को कवर करेगा और इसमें भविष्य के मानकीकरण के लिए मार्गदर्शन नोट भी शामिल होगा।
  - कोड के दो भाग होंगे। पहले में सभी फसलों के लिए सामान्य सिद्धांत होंगे और दूसरे में धान, गेहूं, तिलहन और दालों जैसी फसलों के लिए विशिष्ट मानकों से संबंधित होगा।
  - NAC किसानों, कृषि विश्वविद्यालयों और क्षेत्र में शामिल अधिकारियों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेगा।
  - कृषि मशीनरी के मानकों के अतिरिक्त, NAC सभी कृषि प्रक्रियाओं और कटाई के बाद के कार्यों को भी कवर करेगा।

Source: IE

चारोन(Charon)

समाचार में

- जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप ने प्लूटो के सबसे बड़े चंद्रमा चारोन पर कार्बन डाइऑक्साइड और हाइड्रोजन पेरोक्साइड का पता लगाया है।

परिचय

- प्लूटो, जो पहले नौवां ग्रह था, को 2006 में कुइपर बेल्ट में नेपच्यून से परे समान वस्तुओं की खोज के बाद बौने ग्रह के रूप में पुनर्वर्गीकृत किया गया था।
- कुइपर बेल्ट अंतरिक्ष का एक क्षेत्र है जो नेपच्यून ग्रह से परे स्थित है, जो सूर्य से लगभग 30 से 55 खगोल इकाइयों (AU) तक फैला हुआ है।
- यह प्लूटो सहित बर्फीले पिंडों और बौने ग्रहों के विशाल संग्रह का घर है, और इसे बाहरी सौर मंडल का भाग माना जाता है।
- 1978 में खोजा गया चारोन, प्लूटो का सबसे बड़ा चंद्रमा है, जिसका व्यास लगभग 1,200 किलोमीटर है, जो इसे प्लूटो के आकार का लगभग आधा बनाता है। चारोन और प्लूटो एक विशिष्ट कक्षीय नृत्य में संलग्न हैं, जो एक केंद्रीय बिंदु के चारों ओर घूमते हैं।

जेम्स वेब अंतरिक्ष दूरबीन (JWST)

- जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली स्पेस टेलीस्कोप है, जिसे इन्फ्रारेड लाइट का पता लगाकर शुरुआती ब्रह्मांड का अध्ययन करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- वेब हबल टेलीस्कोप से अलग है, जो मुख्य रूप से दृश्यमान और पराबैंगनी प्रकाश का निरीक्षण करता है।
- वेब धूल से छिपी हुई या हबल के लिए बहुत दूर की आकाशगंगाओं का पता लगा सकता है, जिससे तारों के निर्माण और ब्रह्मांडीय विकास पर गहराई से नज़र डाली जा सकती है।

Source: TOI

पुलिस के लिए साइबर कमांडो प्रशिक्षण

सन्दर्भ

- IIT-मद्रास प्रवर्तक ने पुलिस के लिए साइबर कमांडो प्रशिक्षण शुरू किया है।

परिचय

- छह महीने का आवासीय कार्यक्रम केंद्रीय गृह मंत्रालय की पहल है और इसमें विशेष साइबर प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। यह कार्यक्रम पूरे देश में कानून प्रवर्तन बल के लिए है।
- वर्तमान साइबर अपराध सेल साइबर अपराधों की जांच और अभियोजन जैसे प्रतिक्रियात्मक उपायों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि कमांडो एक सक्रिय बल होंगे।

- प्रतिभागी सीखेंगे कि साइबर हमलों का सक्रिय रूप से पता कैसे लगाया जाए और बचाव विकसित करने के लिए फोरेंसिक तकनीकों का उपयोग कैसे किया जाए।
- IITM प्रवर्तक टेक्नोलॉजीज फाउंडेशन एक सेक्शन 8 कंपनी है जो सेंसर, नेटवर्किंग, एक्ट्यूएटर्स और कंट्रोल सिस्टम पर एक प्रौद्योगिकी नवाचार केंद्र रखती है।
- इसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा अपने राष्ट्रीय मिशन ऑन इंटरडिसिप्लिनरी साइबर-फिजिकल सिस्टम के तहत वित्त पोषित किया जाता है और IIT मद्रास द्वारा होस्ट किया जाता है।

Source: TH

नाविका सागर परिक्रमा द्वितीय अभियान

सन्दर्भ

- नौसेना प्रमुख ने गोवा के महासागर नौकायन नोड, INS मंडोवी से नाविका सागर परिक्रमा II अभियान को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

परिचय

- नाविका सागर परिक्रमा II 240 दिनों में चार महाद्वीपों, तीन महासागरों और तीन चुनौतीपूर्ण अंतरीपों को कवर करेगी और 23,400 समुद्री मील की यात्रा करेगी।
  - यह अभियान गोवा से फ्रेमेंटल, ऑस्ट्रेलिया और फिर फ्रेमेंटल से लिटलटन, न्यूजीलैंड तक होगा।
  - यह दो महिला नौसेना अधिकारियों द्वारा पहली बार वैश्विक परिक्रमा है, जो एक महत्वपूर्ण घटना है।
- यह समुद्र में समुद्री माइक्रोप्लास्टिक्स और लौह सामग्री पर अध्ययन के लिए राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान के सहयोग से राष्ट्रीय वैज्ञानिक अनुसंधान को आगे बढ़ाने में योगदान देगा।

Source: TH

■■■■